प्रश्न → हिन्दी उपन्यास के विकास का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर → 1) उत्पत्ति — वस्तुतः उपन्यास साहित्य का एक नया विधा है जिसका विकास सबसे पहले यूरोप में हुआ। अनेक विद्वानों ने उपन्यास की परिभाषा देते हुए इसे आधुनिक युग का महाकाव्य कहा है इसका कारण यह है कि महायुग में जो कामकाज कार्य काव्यों के द्वारा होता था आज उपन्यासों के द्वारा होता है। महाकाव्य की तरह ही उपन्यास एक विशिष्ट रूप विधान है और उसमें महाकाव्य की तरह ही युगीन व्यापकता होती है।

यूरोप के सांस्कृतिक जागरण के साथ चौदहवीं शताब्दी में इटली के सर्वप्रथम उपन्यास लेखन का कार्य प्रारम्भ हुआ। इटली के बोकेशियो का विश्व प्रसिद्ध उपन्यास 'डेकेमरान' है इसके बाद स्पेन और तब 18 और 19वीं शताब्दी में इंग्लैंड में असाधारण अच्छे उपन्यासों की रचना हुई। इंग्लैंड के गोल्ड स्मिथ जेन आस्टिन, विक्टर ह्यूगो के वाल्टेयर, जोला, जर्मनी के गेटे और अक्टालस्टाय आदि प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं

हिन्दी के पहले बंगला में उपन्यासों की रचना शुरू हुई और इसके बाद तब हिन्दी में बंगला उपन्यासों के अनुवाद आये तब हिन्दी में मौलिक उपन्यास भी लिखे जाने लगे। बंकिम चन्द्र, रवीन्द्रनाथ और शरत बंगला विख्यात उपन्यासकार हुए।

2) हिन्दी का पहला उपन्यासः — अधिकांश आलोचकों हिन्दी के साहित्य इतिहास के लेखकों तथा शोध कर्ताओं ने लाला श्री निवास दास के परीक्षा गुरु (1882) को हिन्दी का पहला उपन्यास कुल भौरी जी के भाग्यवती को हिन्दी के प्रथम उपन्यास के रूप में वर्णित किया गया है।

3) पूर्व प्रेमचन्द युग : —

प्रेमचन्द के पहले बालकृष्ण भट्ट ने नूतन ब्रह्मचारी, राधा कृष्ण दास ने निःसहाय हिन्दी किशोरी लाल गोस्वामी ने 'लवंगलता' गोपाल राय गहमरी ने 'नये बाबू' आदि उपन्यास लिखे, ये सभी लेखक भारतेन्दु युग के एक उपन्यास लिखना शुरू किया जो पूरा न हो सका

उक्त सभी उपन्यास मुख्यतः सामाजिक एवं ऐतिहासिक है। इसी युग में फारसी और उर्दू से प्रभावित होकर तिलस्मि और ऐयारी उपन्यास भी लिखे गये। इस

Scanned with CamScanner

परम्परा के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास कार देवकी नन्दन खत्री हुए। उन्होंने सन 1391 ई० में 'चन्द्रकान्ता' तथा 'चन्द्रकान्ता संतति' नाम से दो उपन्यास लिखे। ये दोनों उपन्यास जासूसी और ऐयारी से भरी रोमांचकारी घटनाओं के कारण इतने लोकप्रिय हुए कि लोगों ने उन्हें पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी। इस परम्परा के उपन्यास कारों में बालमुकुन्द वर्मा गोपाल राय आदि उल्लेखनीय हैं इसी युग में बंगला उपन्यासों के अनुवाद किए गये। जिसमें प्रतापनारायण मिश्र तथा राधा कृष्ण गोस्वामी प्रमुख हैं।

(4) प्रेमचन्द युग — प्रेमचन्द ने ही सर्वप्रथम अपनी श्रेष्ठ कृतियों से हिन्दी उपन्यास को प्रौढ़ता गरिमा और अर्थवत्ता प्रदान की। वस्तुतः आधुनिक हिन्दी उपन्यास की परम्परा का आरम्भ प्रेमचन्द से ही शुरु हुआ। इनके उपन्यास में विभाजित जीवन विशेष रूप से भारत के किसानों मजदूरों और मध्यवर्ग के जीवन का बहुमुखी समस्याएँ प्रतिबिम्बित हुई हैं। एक सामाजिक उपन्यास कार के रूप में प्रेमचन्द ने प्रधानतः आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की प्रवृत्ति का उल्लेख किया है। 'प्रेमाश्रय' से लेकर 'गोदान' तक का इतिहास है प्रेमचन्द के उपन्यास को मानवजीवन का सम्पूर्ण चित्र मात्र कहा है। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने 'वरदान' 'प्रतिज्ञा' 'सेवासदन' 'प्रेमाश्रय, निर्मला कायाकल्प रंगभूमी गबन, कर्मभूमी और गोदान जैसे उपन्यास लिखे। गोदान प्रेमचन्द का ही नहीं बल्कि हिन्दी उपन्यास साहित्य का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इस युग में जयशंकर प्रसाद ने कंकाल और तितली' शिवपूजन सहाय ने देहाती दुनियाँ, चतुरसेन शास्त्री ने वैशाली की नगर वधु बेचन शर्मा उग्र ने दिल्ली का दलाल, राधा राधिका रमण प्रसाद सिंह ने राम रहिम और पुरुष और नारी उपन्यास लिखे। इस युग के ऐतिहासिक उपन्यास कारों में सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का वृन्दावन लाल वर्मा जिन्होंने 'गढ़ कुंडार' विराट की पद्मिनी महारानी लक्ष्मीबाई तथा 'मृगनयनी' उपन्यासों की रचना की।

(5) प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासकार —

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास कारों में सर्वश्रेष्ठ उपन्यास कार जैनेन्द्र कुमार हैं। इन्होंने प्रेमचन्द से भिन्न असामाजिक चेतना को गहन वैचारिक और मनोवैज्ञानिक भूमि को लेकर अपने उपन्यास लिखे और स्पष्टतः हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक विभाजन प्रस्तुत किया। इनके प्रसिद्ध

Scanned with CamScanner

3. ~~रचनाओं में~~ उपन्यासों में 'परख' 'सुखदा' 'त्यागपत्र' 'सुनिता' 'कल्याणी' 'विवर्त' 'मुक्तिबोध' और 'अनाम स्वामी' प्रमुख हैं। व्यक्तिवादिया चेतना के ही उपन्यासकारों में इलाचन्द्र जोशी, भगवती चरण वर्मा और ~~अज्ञेय~~ अज्ञेय प्रमुख हैं।

इलाचन्द्र जोशी फ्रायड के मनोविश्लेषण से अधिक प्रभावित हैं। '______ का पंछी' 'उपन्यासों' 'मुक्ति पथ' 'प्रेत और छाया' इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं वर्मा जी के उपन्यासों में 'चित्रलेखा' 'तीन वर्ष', 'भूले बिसरे चित्र' टेढ़े मेढ़े रास्ते तथा रेखा प्रमुख हैं।

अज्ञेय ने 'शेखर एक जीवनी' नदी के द्वीप अपने अपने अजनबी उपन्यास लिखे।

यथार्थवादी और प्रगतिशील उपन्यास ~~और~~ कारों में यशपाल उपेन्द्र नाथ ~~अ~~ अश्क तथा रांगेय राघव ~~और झूठ नाम से विख्यात उपन्यास हैं~~ उल्लेखनीय हैं। यशपाल ने 'दादा' कामरेड, 'दिव्या' और झूठ नाम से विख्यात उपन्यास हैं रांगेय राघव के मुर्दों का टीला, घरौंदा और 'सीधा साधा रास्ता' उल्लेखनीय उपन्यास हैं।

(6) आधुनिक एवं अत्याधुनिक युग:— पाँचवें दशक में हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक विशेष प्रवृति की शुरुआत हुई। फणीश्वर नाथ रेणु के मैला आंचल के प्रकाशन के बाद इस प्रवृति का नामकरण 'आंचलिक उपन्यास' हुआ। रेणु जी का दूसरा आंचलिक उपन्यास परती परिकथा भी बहुत चर्चित हुआ। रेणु जी की तरह ~~से~~ ही नागार्जुन भी आंचलिक उपन्यासकार के रूप में स्थापित हुवे। इनके आंचलिक उपन्यासों में रतिनाथ की ~~चर्चा चाची~~ चाची बलचनमा का दुख मोचन, उग्रतारा तथा वरुण के बेटे उल्लेखनीय हैं।

अमृतलाल नागर मुख्यतः आंचलिक ~~मुख्य~~ उपन्यासकार नहीं हैं पर प्रेमचन्द की परम्परा में थोड़ी आंचलिकता का पुट लिये हुवे उनके उपन्यास अमृत और विष' तथा बूंद और समुद्र विशेष लोकप्रिय हुवे। डॉ० शिव प्रसाद सिंह तथा शैलेश मटियानी भी इस परम्परा के उपन्यासकार डॉ० सिंह का अलग-अलग वैतरणी बहुत

की ख्याति प्राप्त उपन्यास है।

नयी कहानी की तरह आधुनिक युग के प्रयोग धर्मी सतवाँ घोड़ा राजेन्द्र यादव का सारा आकाश कमलेश्वर का मुर्दा घर निर्मल वर्मा का लाल टीन की छत तथा एक चिथड़ा सुख तथा मनु भण्डारी का आपकी बंटी' कमलेश्वर का अंतरात्मा राजेन्द्र अवस्थी का 'बिमार शहर' जगदम्बा प्रसाद दीक्षित का मुर्दा घर श्री लाल शुक्ल का समय टूटती है एवं राग दरबारी, हजारी प्रसाद द्विवेदी का तथा 'अनामस्वामी' का पोथा' ममता पाली चाचा. अनारक का कुवल का सूरज मुखी' अंधेरे के प्रभाकर माचवे का 'किसलिए कान्ता भारती का रेत की मछली' डॉ. शिवप्रसाद सिंह का गली आगे मुड़ती है मृदुला गर्ग का चित्त कोबरा' अब्दुल बिस्मिल्लाह का जिन्दगी नामा और मेहरुन्निसा परवेज का भेष यश तथा आँखों की दहलीज मन्नू भंडारी का भोज बहुत प्रसिद्ध उपन्यास है।

अभी भी दर्जनों उपन्यासकार हिन्दी उपन्यास साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं हिन्दी उपन्यास के साहित्य का भविष्य प्रोज्ज्वल है।

End